प्रकाशनार्थ

पटना, 19 मार्च। एशियन डेवलपमेंट रिसर्च इंस्टीट्यूट (आद्री) के द्वारा आज एक ऑनलाइन व्याख्यान आयोजित किया गया जिसका शीर्षक था - "प्रौद्योगिकी रोजगार को कैसे प्रभावित करती है"। व्याख्यान एशियाई विकास बैंक (एडीबी) की डा. एलिजाबेट्टा जेनेटाइल द्वारा दिया गया। आयोजन का संचालन आद्री की डा. अस्मिता गुप्ता ने किया। पैनल में बिहार सरकार के शिक्षा विभाग के अपर मुख्य सचिव श्री संजय कुमार, पर्यावरण विभाग के प्रधान सचिव श्री दीपक कुमार, और महिला विकास निगम की प्रबंध निदेशक सुश्री हरजीत कौर बुम्हरा ने भागीदारी की।

डा. एलिजाबेट्टा जेनेटाइल ने कहा कि विकासशील एशिया ने पिछले 25 वर्षों में उद्योग और सेवा क्षेत्रों में 3 करोड़ रोजगार पैदा किए हैं। रोजगार सृजन के साथ-साथ उत्पादकता में सुधार हुआ है, श्रमिकों की आमदनी बढ़ी है, और गरीबी में बड़े पैमाने पर कमी आई है। लेकिन रोजगार संबंधी चुनौतियां अभी समाप्त नहीं हुई हैं। वर्ष 2015 से 2030 के बीच विकासशील एशिया में प्रति वर्ष लगभग 1.1 करोड़ श्रमशक्ति बढ़ने का अनुमान है। लेकिन यह चिंता पैदा हो रही है कि इस ढांचे के कुछ तत्वों से बहुत सारे श्रमिकों के लिए श्रम बाजार के परिणामों में अब कोई सुधार नहीं होगा। विरोधाभास यह है कि यह चिंता पूरे इतिहास में मानव प्रगति के मूल वाहक रहे प्रौद्योगिकीय परिवर्तन के कारण पैदा होती है।

डा. एलिजाबेट्टा ने यह भी कहा कि प्रौद्योगिकी नए पेशों और नए उद्योगों को जन्म देती है। प्रौद्योगिकी में उन्नति होने से आम पेशों में कमी आई है। लेकिन यह कहना सरलीकरण होगा कि "प्रौद्योगिकी रोजगार को विस्थापित कर रही है"। एशिया में उत्पादकता और उपभोक्ताओं की मांग तेजी से बढ़ रही है जिससे प्रौद्योगिकी द्वारा प्रत्यक्ष रूप से विस्थापित होने वाले रोजगार की तुलना में अधिक रोजगार पैदा हो रहा है। लेकिन नवसृजित रोजगारों के लिए विस्थापित रोजगारों से भिन्न किस्म के कौशलों की जरूरत पड़ती है। पेशागत जीवंतता का पोषण करने के लिए सरकार और व्यवसाय, दोनो को महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है। महामारी समाप्त होने के बाद श्रमिकों के लिए आम पेशों में रोजगार की संभावनाएं बेहतर नहीं भी हो सकती हैं। अनेक कंपनियां महामारी पूर्व की उत्पादन प्रक्रिया को दुबारा नहीं शुरू करने वाली हैं। टेलीवर्क (दूर से काम करना) के विस्तारित और निरंतर उपयोग से आम पेशों में लगे अनेक लोगों के लिए मांग में स्थायी कमी आ सकती है। प्रमाण यह दर्शा भी रहे हैं कि महामारी का महिलाओं पर काफी अधिक नकारात्मक प्रभाव पड़ा है क्योंकि वे उच्च शारीरिक नजदीकी वाले पेशों में केंद्रित रही हैं। वे घर में अवैतनिक काम का बोझ भी उठा रही हैं।

बिहार सरकार के शिक्षा विभाग के अपर मुख्य सचिव श्री संजय कुमार ने सत्र की अध्यक्षता करते हुए टिप्पणी की कि मॉडल में बदलाव की जरूरत है क्योंकि प्रौद्योगिकी के उपयोग से आमदनी की अनिश्चितता वाले बड़ी संख्या में लोगों को कोई मदद नहीं मिलती है। वहीं, पर्यावरण विभाग के प्रधान सचिव श्री दीपक कुमार सिंह ने चिन्हित किया कि दुर्भाग्यवश, कौशल विकास कार्यक्रम के ढांचे उद्योग के क्षेत्र में हो रहे प्रौद्योगिकीय परिवर्तनों के साथ कदम से कदम मिलाकर नहीं चल पा रहे हैं। महिला विभाग निगम की प्रबंध निदेशक हरजोत कौर बुम्हरा ने महिलाओं के कौशलों में सुधार लाने की हिमायत की ताकि उन्हें अच्छे वेतन वाले काम मिल सकें। अभी तक तो वे निम्न कौशल वाले कामों में अधिक लगी रही हैं जिनमें प्रौद्योगिकी का कम उपयोग होता है।

प्रारम्भ में आद्री के अध्यक्ष श्री हरीश खरे ने वक्ता का परिचय कराया और स्वागत भाषण दिया। आद्री के सदस्य सचिव प्रोफेसर प्रभात पी. घोष ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

(अंजनी कुमार वर्मा)